DATE 20/4/19
PAGE No.

पाठ-2

राम-लक्ष्मण-परशु राम संवाद

प्रश्न उत्तर

प्र०-1 परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए

उ०- परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने पर तर्क दिए कि हमने बचपन में बहुत सी धनुहियाँ तोड़ी हैं। हमारी समझ में सभी धनुष एक जैसे हैं। इस पुराने धनुष को तोड़ने में तो किसी तरह की लाभ-हानि की बात समझ में नहीं आती है। श्रीरामचंद्र जी ने तो इसे नये के भ्रम में छूआ मात्र था कि यह टूट गया। इसमें उनका कोई दोष ~~नहि~~ नही है।

प्र०-2 परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुई उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

उ०- परशुराम के क्रोध करने पर राम और जो प्रतिक्रि

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

यारूँ हुई उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताओं में अत्यन्त भिन्नता देखने को मिलती है। परशुरामजी के क्रोध की अग्नि से जलते बचनों को सुनकर श्री राम ने धैर्य, शील और विनम्रता का स्वभाव बनाए रखा उन्होंने बहुत ही सहज एवं विनम्र भाव से परशुराम जी का सम्मान करते हुए स्वयं को उनका सेवक बताया।

प्र०-3 लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उ०- परशुरामजी: (फरसे की ओर देखकर लक्ष्मण जी को) अरे दुष्ट! तूने मेरा स्वभाव नहीं सुना? मैं बालक समझकर तुझे नहीं मार रहा हूँ। तू मुझे केवल मुनि मत समझ। मैं बाल ब्रह्मचारी और बहुत क्रोधी हूँ। मेरा प्रताप चारों तरफ फैला है।

लक्ष्मण जी: (हँसकर कोमल शब्दों में) अरे मुनिश्रेष्ठ! आप स्वयं को महान योद्धा मानते हैं। इसलिए बार-बार यह फरसा दिखा रहे हैं। आप फूँक मार कर पहाड़ उड़ाना चाहते हैं। मैं काशी के छोटे फल के समान कमज़ोर नहीं हूँ जो तर्जनी उँगली देख कर मुर्झा जाऊँगा। हमारे वंश में देवता, ब्राह्मण, भक्त और गाय पर वीरता नहीं दिखाई जाती।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

परशुरामजी: (विश्वामित्र से) हे विश्वामित्र! यह बालक मूर्ख है। यह सूर्यवंश के ऊपर कलंक है। इसलिए यह क्षणमात्र में ही काल का ग्रास बन जाएगा। इसे हमारे प्रताप, बल और क्रोध के बारे में बता दीजिए।

लक्ष्मणजी: हे मुनि! आपके यश का बखान आपके अतिरिक्त दूसरा कौन कर सकता है? आप अपने कार्यों की अपनी मुख से अनेक बार प्रशंसा कर चुके हैं। अपको अपना क्रोध रोकने में बहुत दुखः सहन करना पड़ रहा है। कायर अपने प्रताप की बड़ाई किया करते हैं। आप तो बार-बार काल को मेरे लिए बुला रहे हैं।

परशुरामजी: (क्रोध में फरसा उठाकर) अब लोग मुझे दोष न दें, यह कटुवचन बोलने वाला बालक मारने योग्य है। बालक समझकर मैंने इसे बहुत बचाया। अब यह सचमुच मरने वाला है।

प्र०-4 परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या क्या कहा, इस चौपाई के आधार पर लिखिए-

बालक ---------- द्रोही।।
भुजबल ---------- दीन्ही।।
सहसबाहुभुज ---------- महीपकुमार
गर्भन्ह ---------- घोर।।

उ०- परशुराम ने अपने विषय में सभा में बताया कि वे बाल ब्रह्मचारी और अत्यन्त क्रोधी हैं। सारे

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

विश्व में वे क्षत्रियों के कुल के शत्रु के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपनी भुजाओं के बल से पृथ्वी को राजाओं से हीन किया है। उन्होंने यह पृथ्वी अनेक बार ब्राह्मणों को दी है। उन्होंने अपने फरसे से सहस्त्रबाहु की भुजाओं को काटा था। उनका फरसा इतना भयानक है कि गर्भ में ही बच्चों की मृत्यु हो जाती है।

प्र०-5 लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई ?

उ०- लक्ष्मण ने वीर योद्धा की विशेषताएँ बताई हैं कि वे देवता, ब्राह्मण, भक्त और गाय पर अपनी वीरता नहीं दिखाते हैं। योद्धाओं का गाली देना शोभा नहीं देता। वीर कायरों की भाँति अपने प्रताप का केवल बखान नहीं करते अपितु वे तो युद्ध भूमि में साहस पूर्ण कार्य करके अपनी वीरता का परिचय देते हैं।

प्र०-6 साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उ- व्यक्ति अपने साहस और शक्ति के माध्यम से जीवन में संघर्ष करता हुआ आगे बढ़ता है। वह अपने सामर्थ्य के अनुसार परिस्थितियों से जूझता है और उन पर सफलता प्राप्त करता है। किन्तु सभी जगह केवल साहस और बल काम नहीं आते हैं। यदि मनुष्य के स्वभाव में विनम्रता भी सम्मिलित है तो वह सोने पर

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

सुहागे का काम करती हैं और मनुष्य प्रतिकूल एवं आवेशमय परिस्थितियों से सहजता से गुजर जाता है और अपने ध्येय में सफल हो जाता है।

प्र०-1 भाव स्पष्ट करें

(क) बिहसी लखनु - - ---- पहारू ॥

उ०- प्रस्तुत काव्यांश में लक्ष्मण जी ने परशुराम जी पर व्यंग्य किया है। उन्होंने परशुराम जी को महान् योद्धा कहा है। साथ में यह भी बताया है कि केवल क्रोधयुक्त व्यवहार करने से शत्रु को डराया नहीं जाता है। परशुराम जी तो उन्हें तुच्छ प्राणी समझ कर दबाना चाहते हैं और अपने फूँक से पहाड़ को उड़ना चाहते हैं।

(ख) इहाँ कुम्हड़बतिआ कोउ - ----- अभिमाना ॥

उ०- प्रस्तुत काव्यांश का भाव है कि वीर योद्धा काशी के फल के समान नहीं होते जो तर्जनी दिखाने अर्थात शत्रु को थोड़ा बहुत क्रोधित देखकर निस्तेज हो जाते हैं। वीरों के साथ तो वीरतापूर्ण व्यवहार किया जाता है।

(ग) गाधिसूनु - - - - - - - अबूझ ॥

उ०- प्रस्तुत काव्यांश का भाव है कि जिस प्रकार सावन के अंधे को सब ओर हरा-ही-हरा दिखाई देता

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

है, वैसे ही विजय के मद में चूर व्यक्ति को सभी वीर योद्धा तुच्छ और निर्बल नज़र आते हैं। परिणामु स्वरुप वह अपने से ताकतवर शत्रु को पहचान कर भी नहीं पहचान पाता है।

प्र०-8 पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा सौंदर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

उ०. तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में लोक-भाषा को ही माध्यम बनाया है।

- उन्होंने अवधी भाषा के परिमार्जित, साहित्यिक रुप का भी प्रयोग किया है।
- उन्होंने अभिधा, लक्षणा, व्यंजना शब्द-शक्तियों का पर्याप्त ध्यान रखा है।
- उन्होंने प्रसाद, माधुर्य, ओज आदि गुणों की ओर भी संकेत किया है।
- संवादात्मक शैली को अपनाया गया है।
- दोहा और चौपाई छंद का प्रयोग किया गया है।
- यहाँ पर मुख्य रुप से अनुप्रास, उपमा, रुपक, अतिशयोक्ति आदि अलंकारों के द्वारा काव्य-सौंदर्य में वृद्धि हुई है।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

- मुहावरों - लोकोक्तियों का सजीव प्रयोग हुआ है।
- भाषा की अभिव्यक्ति - क्षमता का तुलसीदास ने पूरा परिचय दिया है।

प्र० 10 निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचान कर लिखिए —

(क) बालकु ------ तोही।

उ० - अनुप्रास अलंकार।

(ख) कोटि कुलिस - - - - तुम्हारा।

उ० - उपमा एवं अनुप्रास अलंकार।

(ग) तुम्ह तौ ------ कृसानु

उ० - अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।

(घ) लखन ---------- रघुकुलभानु।

उ० - अनुप्रास अलंकार।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera